मिशन शिक्षण संवाद

प्रेरणा लक्ष्य बोध कार्य व सम्पूर्ण कार्यपत्रक संग्रह

कक्षा - 5

विषय - हिंदी (कलरव)

प्रकरण - पाठ-11- मै और हॉकी

कार्यपत्रक निर्माण:
प्रतिभा यादव (स॰अ॰)
प्राथमिक विद्यालय चौरादेव,
ब्लॉक-पुवॉरका,
जिला-सहारनपुर

प्राथमिक विद्यालय चौरादेव
ब्लॉक-पुवॉरका,जिला-सहारनपुर

कक्षा-5 प्रेरणा लक्ष्य बोध कार्य विषय- हिन्दी

प्रकरण- पाठ-11- मैं और हॉकी (कार्यपत्रक 1)

(हॉकी हमारे देश का राष्ट्रीय खेल है। इस खेल की ओलंपिक प्रतियोगिताओं में भारत प्राय: विजयी होता आया है। अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त हॉकी खिलाड़ी कुँवर दिग्विजय सिंह 'बाबू' ने हेलसिंकी (फिनलैंड) में हुए हॉकी मैच का संस्मरणात्मक परिचय दिया है।)

बहुत से लोगों का ऐसा विचार है कि खेल-कूद में समय नष्ट होता है और स्वास्थ्य के लिए व्यायाम कर लिया जाए, यही काफी है। पर यह ठीक नहीं। खेल-कूद से स्वास्थ्य तो बनता ही है, साथ-साथ मनुष्य कुछ ऐसे गुण भी सीखता है, जिनका जीवन में विशेष महत्व होता है और जो व्यायाम से नहीं प्राप्त हो सकते, जैसे-घमंड न करना, हारने में साहस न छोड़ना, दूसरे से चोट लग जाये तो उसे सहन कर लेना, विशेष ध्येय के लिए नियमपूर्वक कार्य करना आदि। लोग सफलता न पाने पर साहस छोड़ बैठते हैं और दोबारा प्रयास नहीं करते। परंतु खिलाड़ी ऐसा नहीं करता। हार के बाद भी वह प्रयास करता रहता है कि हारी बाजी जीत लेता है।

☆ ऊपर दिए गये अनुच्छेद को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-

प्र॰1- हमारे देश का राष्ट्रीय खेल कौन सा है?

प्र॰2- अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त हॉकी खिलाड़ी 'बाबू' का पूरा नाम क्या है?

प्र॰3- क्या स्वास्थ्य के लिए केवल व्यायाम कर लेना काफी है?

प्र॰4- खेल कूद से क्या लाभ है?

☆ शब्दार्थ:

1) ध्येय = लक्ष्य, उददेश्य 2) अन्तर्राष्ट्रीय = सम्पूर्ण विश्व का

कार्यपत्रक निर्माण- प्रतिभा यादव (स॰अ॰),प्राथमिक विद्यालय चौरादेव

प्राथमिक विद्यालय चौरादेव
ब्लॉक-पुवॉरका,जिला-सहारनपुर

कक्षा-5 प्रेरणा लक्ष्य बोध कार्य विषय- हिन्दी

प्रकरण- पाठ-11- मैं और हॉकी (कार्यपत्रक 2)

दृढ़ संकल्प द्वारा अपने देश की सेवा का मेरा स्वप्न उस दिन पूरा हुआ जिस दिन मैं हेलसिंकी (फ़िनलैंड) के मैदान में अपनी हॉकी-टीम को अन्तर्राष्ट्रीय ओलंपिक में जिता सका। उस दिन के 'जन गण मन' का मधुर वादन आज कई वर्ष के पश्चात भी मेरे कानों में गूँज रहा है।

यूँ तो खेल मेरे सारे कुटुम्ब को प्रिय है, परंतु यह कहना भी आवश्यक है कि मेरे पिता स्वर्गीय रॉय बहादुर रघुनाथ सिंह खेल में विशेष रुचि रखते थे। मेरे पास बहुत-सी तस्वीरों के साथ एक तस्वीर ढाई साल की उम्र की है जिसमें मैं हॉकी और बॉल लिए बैठा हूँ।

मेरे खेल का प्रारंभ बाराबंकी में हुआ। मेरे बड़ों का कहना है कि कमाई का काफी पैसा मेरे घर के मोटरखाने का फाटक बनवाने में खर्च हुआ, क्योंकि वह हर महीने मेरी हॉकी की गेंद से टूटता था। कुछ ऐसी ही कहानी लखनऊ के कान्यकुब्ज कॉलेज में छात्रावास की दीवारें भी कहती हैं। मुझे यह आज तक ठीक से याद है कि जब मैं बाराबंकी से लखनऊ पढ़ने आया तो मेरे सामान में सबसे अधिक हॉकी स्टिक की महत्ता थी। अपने कॉलेज की टीम में खेलने का मुझे उसी साल सौभाग्य प्राप्त हुआ।

☆ ऊपर दिए गये अनुच्छेद को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-

प्र॰1- लेखक का स्वप्न कब पूरा हुआ?

प्र॰2- 'जन गण मन हमेशा प्रिय होता है लेकिन उस दिन की बात और ही थी'। लेखक ने ऐसा क्यों लिखा है?

प्र॰3- हॉकी का अन्तर्राष्ट्रीय ओलंपिक मैच कहाँ हुआ?

प्र॰4- लेखक बाराबंकी से लखनऊ किस कॉलेज में पढ़ने आए?

प्र॰5- लेखक के सभी सामान में सबसे अधिक किसकी महत्ता थी?

☆ शब्दार्थ:

3) दृढ़ संकल्प = पक्का निश्चय 4) नियंत्रण = वश में रखना

कार्यपत्रक निर्माण- प्रतिभा यादव (स॰अ॰),प्राथमिक विद्यालय चौरादेव

प्राथमिक विद्यालय चौरादेव
ब्लॉक-पुवॉरका,जिला-सहारनपुर

कक्षा-5 प्रेरणा लक्ष्य बोध कार्य विषय- हिन्दी

प्रकरण- पाठ-11- मैं और हॉकी (कार्यपत्रक 3)

सन् 1936 में मैं देहली के एक टूर्नामेंट में खेलने गया, जिसमें देश के सुप्रसिद्ध खिलाड़ी मो॰ हुसैन फुल बैक खेल रहे थे। उस दिन खेल पर मुझे एक सुंदर उपहार मिला। मेरा साहस और प्रयास बढ़ता गया। मेरी सदैव इच्छा होती रही कि किस प्रकार खेलूँ कि जिससे इस खेल के सबसे उच्च स्तर पर पहुँच जाऊँ। सन् 1936-40 में मुझको अपने प्रदेश की ओर से खेलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

सन् 1946-47 में मुझको पहली बार भारत की टीम की ओर से खेलने का अवसर मिला उस समय पाकिस्तान और भारत का विभाजन नही हुआ था। सन् 1947 में सुप्रसिद्ध खिलाड़ी ध्यानचंद्र के नेतृत्व में मैं ईस्ट अफ्रीका गया और वहाँ स्थान-स्थान पर कई मैच खेले और उनसे खेल के विषय में बहुत कुछ सीखा।

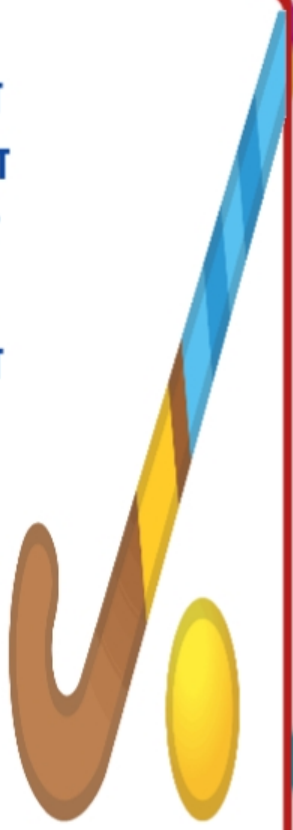

☆ ऊपर दिए गये अनुच्छेद को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-

प्र॰1- सन् 1936 देहली में जिस टूर्नामेंट में लेखक खेलने गये उसमें कौन से सुप्रसिद्ध खिलाड़ी खेल रहे थे ?

प्र॰2- सन् 1936 देहली के खेल में लेखक को क्या मिला ?

प्र॰3- लेखक की सदैव क्या इच्छा होती रही ?

प्र॰4- लेखक को पहली बार भारत की टीम की ओर से खेलने का अवसर कब प्राप्त हुआ ?

प्र॰5- लेखक ने सन् 1947 में किस सुप्रसिद्ध खिलाड़ी के नेतृत्व में मैच खेले ?

☆ शब्दार्थ:

5) व्यवधान = बाधा 6) संकुचित = तंग/सँकरा

कार्यपत्रक निर्माण- प्रतिभा यादव (स॰अ॰),प्राथमिक विद्यालय चौरादेव

प्राथमिक विद्यालय चौरादेव
ब्लॉक-पुवाँरका,जिला-सहारनपुर

मिशन प्रेरणा

मिशन शिक्षण संवाद

कक्षा-5 प्रेरणा लक्ष्य बोध कार्य विषय- हिन्दी

प्रकरण- पाठ-11- मैं और हॉकी (कार्यपत्रक 4)

द्वितीय महायुद्ध के पश्चात 1948 में मुझे लंदन में वर्ल्ड-ओलंपिक में खेलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस खेल में पहली बार भारतवर्ष और इंग्लैंड दोनों ने अन्तर्राष्ट्रीय हॉकी में भाग लिया। अब जब मैं यह लिख रहा हूँ तो मुझे ठीक से याद है कि लाखों की भीड़ में भारतवर्ष के थोड़े से आदमियों ने किस तरह से चीख-चीखकर अपने देश का साहस बढ़ाया था। खेल के शुरू होने के थोड़ी देर बाद जब भारतवर्ष के खिलाड़ी अच्छा खेलने लगे और उन्होंने इंग्लैंड के ऊपर दो गोल कर दिए तो अंग्रेज जनता भी भारतीय टीम की हर चाल की सराहना करने लगी। खेल समाप्त होने पर हम लोगों को वहाँ से निकलने में दो घंटे से ऊपर समय लगा। इतनी देर में वे लोग भारतीय टीम की प्रशंसा करते रहे और किसी ने हस्ताक्षर माँगे, किसी ने खाने पर तो किसी ने चाय पर आमंत्रित किया।

☆ ऊपर दिए गये अनुच्छेद को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-

प्र॰1- द्वितीय महायुद्ध के पश्चात किस वर्ष में लेखक को वर्ल्ड-ओलंपिक में खेलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ?

प्र॰2- उस वर्ष वर्ल्ड ओलंपिक में पहली बार किस-किस देश ने अन्तर्राष्ट्रीय हॉकी में भाग लिया ?

प्र॰3- लाखों की भीड़ मे भारतवर्ष के थोड़े से आदमियों ने किस तरह से अपने देश का साहस बढ़ाया ?

प्र॰4- खेल समाप्त होने पर लोगों की क्या प्रतिक्रिया रही?

☆ तुम्हारी कलम से-

1) आपको कौन सा खेल पसंद है ?

2) यह खेल ही क्यों पसंद है?

कार्यपत्रक निर्माण- प्रतिभा यादव (स॰अ॰),प्राथमिक विद्यालय चौरादेव

प्राथमिक विद्यालय चौरादेव
ब्लॉक-प्रवॉरका,जिला-सहारनपुर

कक्षा-5 प्रेरणा लक्ष्य बोध कार्य विषय- हिन्दी

प्रकरण- पाठ-11- मैं और हॉकी (कार्यपत्रक 5)

सन् 1952 में मेरी मनोकामना पूर्ण हुई। मेरे प्रयास तथा लगन को पुरस्कार मिला और मुझे भारतवर्ष की टीम का नेतृत्व करने का सुयोग मिला। इस बार ओलंपिक खेल फिनलैंड की राजधानी हेलसिंकी में हुए। मैं एक अजीब परिस्थिति में था। जहाँ एक ओर मेरी मनोकामना पूरी हुई, वहाँ दूसरी ओर इतनी बड़ी जिम्मेदारी से मेरा जी घबराने लगा। परंतु अपने गुरूजनों का आशीर्वाद लकर मैं लक्ष्य की ओर बढ़ा। कुछ दैनिक पत्रों ने यह घोषणा की कि शायद इस बार भारत विजेता न हो। पर इन बातों से हम लोगों का साहस न छूटा। लगन अवश्य बढ़ गई।

हेलसिंकी में बड़ी ठंडक पड़ती है इसीलिए 20 दिन पहले हम लोगों की टीम डेनमार्क की राजधानी कोपहेगन पहुँच गई। इस के पश्चात हम लोग हेलसिंकी पहुँचे। इस देश में एक अजीब बात है। गरमी में वहाँ 20 घंटे दिन रहता है और 4 घंटे थोड़ा-सा अँधेरा और रात। इसके ठीक विपरीत यहाँ जाड़े में लंबी रातें और छोटे दिन होते हैं। हम लोगों को परिस्थितियों के अनुसार अपने को ढालने में कुछ समय लगा।

☆ ऊपर दिए गये अनुच्छेद को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-

प्र॰1- लेखक के अनुसार सन् 1952 में लेखक की मनोकामना कैसे पूर्ण हुई ?

प्र॰2- सन् 1952 में ओलंपिक के खेल कहाँ हुए ?

प्र॰3- लेखक किस परिस्थिति में थे ?

प्र॰4- कुछ दैनिक पत्रों ने क्या घोषणा की ?

प्र॰5- फिनलैंड में गरमी में कितने घंटे दिन रहता है और कितने घंटे रात ?

☆ तुम्हारी कलम से-

1) आपको जो खेल पसंद है वह कैसे खेला जाता है ?

2) इस खेल को कितने लोग एक साथ खेलते है ?

कार्यपत्रक निर्माण- प्रतिभा यादव (स॰अ॰),प्राथमिक विद्यालय चौरादेव

प्राथमिक विद्यालय चौरादेव
ब्लॉक-पवॉरका,जिला-सहारनपुर
कक्षा-5 प्रेरणा लक्ष्य बोध कार्य विषय- हिन्दी
प्रकरण- पाठ-11- मैं और हॉकी (कार्यपत्रक 6)

सेमी फाइनल में भारत का सामना ब्रिटेन से हुआ। ब्रिटेन के एक गोल के विरुद्ध भारत ने तीन गोल किए और वह विजयी घोषित हुआ। मुझे आज तक याद है कि सेमी फाइनल के बाद जो दो दिन का अवकाश मुझे मिला, वह किस तरह कटा। परंतु साहस और धैर्य ने साथ नहीं छोड़ा।

फाइनल मैच में हमारी टीम का मुकाबला नीदरलैंड की टीम से हुआ। यद्यपि पहले से ही किसी के मन में संदेह नहीं रह गया था कि विजय-श्री भारत को मिलेगी तथापि नीदरलैंड की टीम ने प्रशंसनीय कौशल का प्रदर्शन किया। खेल आरंभ होने के पंद्रह मिनट तक दोनो टीमें बराबर रहीं। इसके बाद हमारी टीम ने गोल करना शुरू किया और पंद्रह मिनट के अन्तराल पर उस पर चार गोल किए। हाफ टाईम के बाद नीदरलैंड की टीम ने और भी चौकस खेल दिखाया और उसने एक गोल भी किया। लेकिन इसके विरुद्ध हमारी टीम ने और दो गोल किए। इस तरह हमने नीदरलैंड के एक गोल के विरुद्ध उसे छह गोल से हराया।

☆ ऊपर दिए गये अनुच्छेद को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-

प्र·1- सेमीफाइनल में भारत का सामना किस देश से हुआ ?
प्र·2- सेमीफाइनल में कौन सा देश विजयी घोषित हुआ ?
प्र·3- फाइनल मैच में भारत की टीम का मुकाबला किस देश की टीम से हुआ ?
प्र·4- फाइनल मैच में नीदरलैंड की टीम का प्रदर्शन कैसा रहा ?
प्र·5- फाइनल मैच में कौन सा देश विजयी घोषित हुआ और कैसे ?

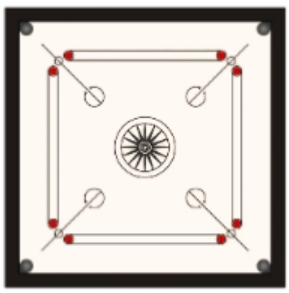

☆ पहचानो-
1) यह कौन सा खेल है?
2) इस खेल को कितने लोग एक साथ खेलते है ?
3) इस खेल को कहाँ खेला जाता है, कमरे के अंदर या मैदान में ?
4) क्या आपको यह खेल पसंद है ?

कार्यपत्रक निर्माण- प्रतिभा यादव (स·अ·),प्राथमिक विद्यालय चौरादेव

प्राथमिक विद्यालय चौरादेव
ब्लॉक-पवॉरका,जिला-सहारनपुर
कक्षा-5 प्रेरणा लक्ष्य बोध कार्य विषय- हिन्दी
प्रकरण- पाठ-11- मैं और हॉकी (कार्यपत्रक 7)

प्रेक्षकों का कहना था कि हमारी विजय का सबसे बड़ा कारण गेंद पर हमारा नियन्त्रण था। हमारे खिलाड़ी गेंद को वश में करके उसे केवल 'ड्रिबुल' करते या 'पास' देने में ही दक्ष नहीं थे बल्कि दूसरों से प्राप्त गेंद को भी वे बड़ी शीघ्रता और कुशलता से अपने नियंत्रण में कर लेते थे। उनमें यह भी कौशल था कि बहुत संकुचित स्थान में गेंद के साथ पैंतरेबाजी दिखा सकते थे। तीसरे, हमारी टीम का हर खिलाड़ी अपने स्थान के महत्व को समझता था और उसे प्रतिरक्षा और आक्रमण के मौके की पूरी पहचान थी।

'जन गण मन' हमेशा प्रिय होता है, पर उस दिन की बात और ही थी। आखिरकार वह दिन आया जब मैं विक्ट्री स्टैंड पर खड़ा हुआ। मैने अपने भाग्य को सराहा कि हॉकी में विश्वविजयी होने के भारत के गौरव की मैं रक्षा कर सका। उस दिन मुझे यह विश्वास हो गया कि यदि मनुष्य अपना धैर्य और साहस न छोड़े और निरंतर प्रयास करता रहे तो वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। स्वदेश लौटने पर मुझे 'पद्मश्री' की उपाधि मिली, जिसे मैं अपने जीवन की अमूल्य निधि मानता हूँ।

☆ ऊपर दिए गये अनुच्छेद को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-

प्र॰1- प्रेक्षकों का क्या कहना था ?

प्र॰2- खिलाड़ी गेंद को कैसे अपने नियंत्रण में कर लेते थे ?

प्र॰3- " 'जन गण मन' हमेशा प्रिय होता है, पर उस दिन की बात और ही थी" लेखक ने ऐसा क्यों कहा ?

प्र॰4- उस दिन लेखक को क्या विश्वास हो गया ?

प्र॰5- स्वदेश लौटने पर लेखक को कौन सी उपाधि मिली ?

☆ यह भी जानो -

1) हमारे देश का राष्ट्रीय खेल कौन सा है ?

उ॰ - हॉकी।

2) राष्ट्रीय खेल दिवस कब मनाया जाता है ?

उ॰ - भारत में राष्ट्रीय खेल दिवस 29 अगस्त को मनाया जाता है।

3) राष्ट्रीय खेल दिवस किसकी याद में मनाया जाता है ?

उ॰ - राष्ट्रीय खेल दिवस हॉकी के जादूगर 'मेजर ध्यानचंद जी' की याद में मनाया जाता है।

कार्यपत्रक निर्माण- प्रतिभा यादव (स॰अ॰),प्राथमिक विद्यालय चौरादेव